रस	छंद	अलंकार
1. श्रृंगार रस	1. चौपाई	1. अनुप्रास अलंकार
2. करुण रस	2. दोहा	2. यमक अलंकार
3. हास्य रस	3. सोरठा	3. श्लेष अलंकार
4. वीर रस	4. कुण्डलिया	4. उपमा अलंकार
5. शांत रस		5. रुपक अलंकार
		6. उत्प्रेक्षा अलंकार
		7. भ्रांतिमान अलंकार
		8. संदेह अलंकार

रस

रस की परिभाषा

'रस' का अर्थ है– 'आनन्द'

काव्य को पढ़ने, सुनने अथवा अभिनय को देखने पर पाठक, श्रोता या दर्शक को जो आनन्द प्राप्त होता है, उसे 'रस' कहते हैं।

रस को 'काव्य की आत्मा' भी कहा जाता है।

रस	स्थायी भाव
1. श्रृंगार रस	1. रति
2. हास्य रस	2. हास
3. करुण रस	3. शोक
4. वीर रस	4. उत्साह
5. रौद्र रस	5. क्रोध
6. भयानक रस	6. भय
7. बीभत्स रस	7. जुगुप्सा (घृणा)
8. अद्भुत रस	8. विस्मय
9. शान्त रस	9. निर्वेद
10. वात्सल्य रस	10. वत्सल
11. भक्ति रस	11. भक्ति

1. शृंगार रस

रति नामक स्थायीभाव जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव से पूर्ण हो रस की निष्पत्ति करता है तो उस रस को शृंगार रस कहते हैं। शृंगार रस को रसों का राजा कहा जाता है।

शृंगार रस दो प्रकार का होता है–

1. संयोग शृंगार
2. वियोग शृंगार

उदाहरण

1. **संयोग शृंगार-**

बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय।
सौंह करै भौंहनि हँसै, दैन कहै नहि जाय।

1. **वियोग शृंगार-**

निसिदिन बरसत नयन हमारे,
सदा रहति पावस ऋतु हम पै जब ते श्याम सिधारे।

2. हास्य रस

हास नामक स्थायीभाव जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव से पूर्ण हो रस की निष्पत्ति करता है तो उस रस को हास्य रस कहते हैं।

कहा बंदरिया ने बन्दर से चलो नहाने चले गंगा।
बच्चो को छोड़ेंगे घर पे होने दो हुडदंगा॥

3. करुण रस

शोक नामक स्थायीभाव जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव से पूर्ण हो रस की निष्पत्ति करता है तो उस रस को करुण रस कहते हैं।

रही खरकती हाय शूल-सी, पीड़ा उर में दशरथ के।
ग्लानि, त्रास, वेदना-विमण्डित, शाप कथा वे कह न सके॥

4. वीर रस

उत्साह नामक स्थायीभाव जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव से पूर्ण हो रस की निष्पत्ति करता है तो उस रस को वीर रस कहते हैं।

वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो।
सामने पहाड़ हो कि सिंह की दहाड़ हो।
तुम कभी रुको नहीं, तुम कभी झुको नहीं॥

5. शांत रस

निर्वेद नामक स्थायी भाव जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव से पूर्ण हो रस की निष्पत्ति करता है तो उस रस को शांत रस कहते हैं।

माटी कहै कुम्हार से, तू क्या रौंदे मोय।
एक दिन ऐसा आऐगा, मैं रौंदूगी तोय।

छंद

छन्द का सामान्य अर्थ है— **बंधन**।

मात्रा, तुक, लय, विराम और वर्ण आदि के नियमों से बंधी वाक्य रचना को **छन्द** कहते हैं;

परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण छन्द

- चौपाई
- दोहा
- सोरठा
- कुण्डलियां

चौपाई छन्द : परिभाषा और पहचान

यह एक **सम मात्रिक छन्द** है। इसमें **चार चरण** होते हैं। इसके हर एक चरण में **16 मात्राएँ** होती है। तुक, पहले चरण की दूसरे और तीसरे चरण के चौथे से मिलती है। यति हर एक चरण के अन्त में होती है।

उदहारण :

नृपन्ह केरि आसा निसि नासी। बचन नखत अवलीन प्रकासी॥

मानी महिप कुमुद सकुचाने। कपटी भूप उलूक लुकाने॥

दोहा छंद : परिभाषा और पहचान

यह अर्ध सम-मात्रिक छंद है, इसमें 4 चरण होते हैं। इसके **सम चरणों(दूसरा और चौथा)** में **11-11 मात्राएं** होती हैं, **विषम चरणों(पहला और तीसरा)** में **13-13 मात्राएं** होती हैं। तुक, दूसरे चरण की चौथे चरण से। यति हर एक चरण के अन्त में होती है।

उदहारण :

कारज धीरे होत है, काहे होत अधीर।
समय पाय तरुवर फरै, केतक सींचो नीर।

सोरठा छंद : परिभाषा और पहचान

यह अर्ध सम-मात्रिक छंद है, यह दोहा के ठीक उल्टा होता है, इसमें भी चार चरण होते हैं। दोहा के ठीक विपरीत सोरठा के **सम चरणों(दूसरा और चौथा)** में **13-13 मात्राएं** तथा **विषम चरणों(पहला और तीसरा)** में **11-11 मात्राएं** होती है। तुक, प्रथम एवं तृतीय चरण में होता है।

उदहारण :

जिहि सुमिरत सिधि होइ, गन नायक करिबर बदन।

करउ अनुग्रह सोइ, बुद्धि रासि सुभ गुन सदन।

कुण्डलियां छंद : परिभाषा और पहचान

कुण्डलियां **विषम मात्रिक छंद** होता है। इसमें **6 चरण** होते हैं। शुरू के **2 चरण दोहा** और बाद के **4 चरण रोला छंद** के होते हैं। इस तरह हर चरण में **24 मात्राएँ** होती हैं।

उदहारण :

घर का जोगी जोगना, आन गाँव का सिद्ध।
बाहर का बक हंस है, हंस घरेलू गिद्ध।
हंस घरेलू गिद्ध , उसे पूछे ना कोई।
जो बाहर का होई, समादर ब्याता सोई।
चित्तवृति यह दूर, कभी न किसी की होगी।
बाहर ही धक्के खायेगा, घर का जोगी॥

अलंकार

अलंकार किसे कहते हैं?

जिस प्रकार आभूषण मनुष्यों की शोभा बढ़ाते हैं, उसी प्रकार साहित्य में शब्दों और अर्थों के माध्यम से चमत्कार लाने वाले तत्वों/शब्दार्थों को अलंकार कहते हैं।

अलंकार के भेद

1. शब्दालंकार - शब्दों के माध्यम से चमत्कार (अनुप्रास, यमक, श्लेष)
2. अर्थालंकार - अर्थ के माध्यम से चमत्कार (उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, भ्रांतिमान, संदेह)

1. शब्दालंकार -

शब्दों के माध्यम से चमत्कार (अनुप्रास, यमक, श्लेष)

अनुप्रास अलंकार

जहाँ पर किसी व्यंजन वर्ण की आवृत्ति(दुहराना) होती है, वहाँ पर अनुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण

1. **त**रनि-**त**नूजा **त**ट **त**माल **त**रूवर बहु छाये।
2. **को**मल **क**लाप **को**किल **क**मनीय **कू**कती थी।
3. **र**घुपति **रा**घव **रा**जा **रा**म।

यमक अलंकार

जब एक ही शब्द दो या दो से अधिक बार आए पर हर बार अर्थ अलग-अलग हो तो वहाँ पर यमक अलंकार होता है।

उदाहरण

कनक कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय।
वा खाये बौराए नर, वा पाये बौराये।

काली **घटा** का घमंड **घटा**।

श्लेष अलंकार

जहाँ पर कोई एक शब्द एक ही बार आए पर उसके अर्थ अलग-अलग हों, वहाँ पर श्लेष अलंकार होता है।

उदाहरण

रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून।
पानी गए न उबरै मोती मानस चून॥

चरण धरत चिंता करत चितवत चारिहुँ ओर।
सुवरन को खोजत फिरे, कवि, व्यभिचारी, चोर॥

2. अर्थालंकार -

अर्थ के माध्यम से चमत्कार (उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, भ्रांतिमान, संदेह)

(उपमेय, उपमान, वाचक शब्द, साधारण धर्म)

1. उपमेय- जिस वस्तु की समानता किसी दूसरी वस्तु से बताई जाए उसे उपमेय कहते हैं ।
2. उपमान- उपमेय की जिस के साथ समानता बताई जाती है उसे उपमान कहते हैं।
3. वाचक शब्द- उपमेय और उपमान में समानता दिखने के लिए जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है, उसे वाचक शब्द कहते हैं।
4. साधारण धर्म- दो वस्तुओं के बीच समानता दिखाने के लिए जब किसी ऐसे गुण या धर्म की मदद ली जाती है जो दोनों में वर्तमान स्थिति में हो उसी गुण या धर्म को साधारण धर्म कहते हैं।

उपमा अलंकार

उपमा शब्द का अर्थ होता है – तुलना।
जब किन्ही दो वस्तुओं के गुण, आकृति, स्वभाव आदि में समानता दिखाई जाए या दो भिन्न वस्तुओं कि तुलना कि जाए, तब वहां उपमा अलंकर होता है।

उदहारण

1. हरिपद कोमल कमल से।

2. पीपर पात सरिस मन डोला।

रूपक अलंकार

जब गुण की अत्यंत समानता के कारण उपमेय को ही उपमान बता दिया जाए अर्थात जहाँ पर उपमेय और उपमान में कोई अंतर न दिखाई दे, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

उदाहरण

1. चरण कमाल बंदाऊ हरि राई।
2. उदित उदयगिरी-मंच पर, रघुवर बाल-पतंग।

उत्प्रेक्षा अलंकार

जहाँ पर उपमान के न होने पर उपमेय को ही उपमान मान लिया जाए। जहाँ पर अप्रस्तुत को प्रस्तुत मान लिया जाए वहाँ पर उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। इस अलंकार में- **मनु, जनु, जनहु, जानो, मानहु, मानो, निश्चय, ईव, ज्यों** आदि वाचक शब्द आते हैं।

उदहारण

सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात
मनहुँ नीलमनि सैल पर, आतप परयौ प्रभात।

भ्रांतिमान अलंकार

जब उपमेय में उपमान के होने का भ्रम हो जाता है अर्थात जहाँ एक वस्तु को देखने पर दूसरी वस्तु का भ्रम हो जाता है, तो वहाँ पर 'भ्रांतिमान अलंकार' होता है।

उदहारण

ओस बिन्दु चुग रही हंसिनी मोती उनको जान।

नाक का मोती अधर की कांति से,

बीज दाड़िम का समझकर भ्रान्ति से।

सम्पूर्ण हिन्दी रिवीजन चालीसा
समय कम है
पर डरना मत
LIVE @सुबह 6 बजे
जो जो हिन्दी की यह
क्लास देख के जावे,
ओहिका TOPPER
बने से कोई रोक ना पावे
आचार्य ऋषि के शासन में 100/100 मिलेंगे राशन में

संदेह अलंकार

जब उपमेय और उपमान में समता देखकर यह निश्चय नहीं हो पाता कि उपमान वास्तव में उपमेय है या नहीं अथार्त जहाँ पर किसी व्यक्ति या वस्तु को देखकर संशय बना रहे, वहाँ संदेह अलंकार होता है।

उदाहरण

सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है।
सारी ही की नारी है कि नारी ही की सारी है।

यह काया है या शेष उसी की छाया,
क्षण भर उनकी कुछ नहीं समझ में आया।